BCM SCHOOL BASANT AVENUE DUGRI
MUSIC VOCAL ASSIGNMENT
CLASS:XII

1: ग्राम को परिभाषित कीजिए ? 2

2,तानपुरा मिलाने की विधि का संक्षिप्त वर्णन करे ? 2

3: राग भैरव का संक्षिप्त परिचय दीजिए? 2

4: कण शब्द का वर्णन करे ? 2

5:हमारा प्राचीन संगीत ग्राम शब्द से सम्बद्ध रहा है । भरत ने केवल दो ग्रामों षडज ग्राम और मध्यम ग्राम का वर्णन किया है और गन्धार ग्राम को स्वर्ग स्थित बताया है । मतंग मुनि ने भी तीसरे ग्राम का नाम तो लिया , किन्तु उसे स्वर्ग – स्थित बताया । उसके बाद के सभी लेखकों ने तीसरे की खोज की चेष्टा नहीं की और तीन ग्रामों का उल्लेख करते हुये गंधार ग्राम के लोप होने की बात ज्यों की त्यों मान लिया है ।

ग्राम ग्राम स्वरसमूहः स्यात्मूर्छनादेः समाश्रयः । – Sangeet Ratnakar

। इनमें से किसी भी स्वर का स्थान बदल देने से इसे षडज ग्राम नहीं माना जाएगा । षडज ग्राम के सातों स्वर क्रमशः 4 , 3 , 2 , 4 , 4 , 3 , 2 श्रुत्यांतरों पर होने ही चाहिये । आगे चलकर षडज ग्राम से मध्यम ग्राम की रचना हुई । नीचे पं0 शारंगदेव कृत ' संगीत रत्नाकर ' दोहा दिया जा रहा है , जिनके आधार पर सप्तक के सातों स्वरों का स्थान प्राचीन काल से आज तक निश्चित किया जाता है

मध्यम ग्राम की परिभाषा – इसके सातों स्वर क्रमशः 4 , 3 , 2 , 4 , 3 , 4 , 2 श्रुत्यांतरों पर स्थित हैं । इस ग्राम के पाचवें और छठवें स्वर षडज ग्राम के स्वरों से भिन्न हैं , अन्यथा सभी शेष स्वर समान हैं । मध्यम ग्राम के श्रुत्यांतर षडज ग्राम से इस प्रकार प्राप्त किये गये। षडज ग्राम के सातों स्वर 4 , 3 , 2 , 4 , 4 , 3 , 2 श्रुत्यांतरों पर रक्खे गये हैं । इसमें पाँचवे स्वर अर्थात् पंचम की एक श्रुति कम कर दी गई । अतः धैवत अपने पिछले स्वर पंचम से 3 श्रुति के स्थान पर 4 श्रुति ऊँचा हो गया । दूसरे शब्दों में प की 3 और ध की 4 श्रुतियाँ हो गई । अतः अब मध्यम ग्राम के सातों स्वर क्रमशः 4 , 3 , 2 , 4 , 3 , 4 , 2 श्रुतियों की दूरी पर स्थापित हो गये ।

गंधार ग्राम की परिभाषा – इसका वर्णन भरत ने नहीं किया है । उसने बस इतना ही कहा कि गन्धार ग्राम गांधर्व लोगों के साथ स्वर्ग – लोक में निवास करता है । भरत के बाद नारद , अहोबल , और शारंगदेव ने गंधार ग्राम की चर्चा की है । ' संगीत रत्नाकर ' में कहा गया है कि जब रे ग की एक – एक श्रुति गन्धार को , प की एक श्रुति ध को औ सा की एक – एक श्रुति निषाद को मिल जाय तो गंधार ग्राम व होती है । इस वर्णन से केवल निषाद को चार श्रुतियां मिलती है शेष स्वरों को 3-3 यथा 1 , 4 , 7 , 10 , 13 , 16 और 19 वीं श्रुति

शेष स्वरों को 3-3 यथा 1 , 4 , 7 , 10 , 13 , 16 और 19 वीं श्रुति पर नि , सा , रे , ग , म , प और ध स्वर
1:ग्राम किसे कहते है ?
2: संगीत में ग्राम कितने होते हैं?
3:षड्ज ग्राम क्या है?
4:माध्यम ग्राम क्या है?
5:गांधार ग्राम क्या है?
6: षड्ज ग्राम में कौन सा स्वर कम करने से माध्यम ग्राम बनता है ? 6

6: उस्ताद फैयाज खान (8 फरवरी 1886 - 5 नवंबर 1950) एक भारतीय शास्त्रीय गायक थे, जो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के आगरा घराने के प्रतिपादक थे ।स्वरगंगा म्यूजिक फाउंडेशन की वेबसाइट के अनुसार, " बड़ौदा में अपनी मृत्यु के समय तक , उन्होंने सदी के सबसे महान और सबसे प्रभावशाली गायकों में से एक होने की प्रतिष्ठा अर्जित की थी।"
1886 में उत्तर प्रदेश के सिकंदरा में जन्मे , वह सफदर हुसैन के पुत्र थे, जिनकी मृत्यु उनके जन्म से तीन महीने पहले हुई थी। उनका पालन-पोषण उनके नाना गुलाम अब्बास (1825-1934) ने किया, जिन्होंने उन्हें 25 साल की उम्र तक संगीत सिखाया। [2] वह अपने ससुर उस्ताद महबूब खान "दारस्पिया" के छात्र भी थे। नाट्यन खान और उनके चाचा फिदा हुसैन खान। 'ग्रेट मास्टर्स ऑफ हिंदुस्तानी म्यूजिक' नामक एक संगीत वेबसाइट पर एक लेख के अनुसार, "फैयाज खान का संगीत वंश खुद तानसेन के पास जाता है । उनके परिवार का पता अलखदास, मलूकदास और फिर हाजी सुजान खान (अलखदास का पुत्र जो बन गया|फैयाज खान ने बड़ौदा के महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ III के दरबारी संगीतकार के रूप में लंबे समय तक सेवा की , जहां उन्हें "ज्ञान रत्न" (ज्ञान का रत्न) से सम्मानित किया गया। महाराजा की मैसूर उसे खिताब से सम्मानित किया "आफताब-ए-Mausiqi" 1908 में (संगीत के सूर्य) [2] फैयाज खान की विशेषता थे ध्रुपद और khyal है, लेकिन वह भी गा करने में सक्षम था ठुमरी और ग़ज़ल । प्रसिद्ध संगीतज्ञ डॉ. अशोक रानाडे , जो संगीत केंद्र, बॉम्बे विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक थे , के अनुसार, "उनके कवच में कोई झंझट नहीं थी"। [३] उनकी सबसे लोकप्रिय ठुमरी बाजू बैंड खुल खुल जाएगी।
"वह लखनऊ , इलाहाबाद , कलकत्ता , ग्वालियर , बॉम्बे और मैसूर के संगीत सम्मेलनों और मंडलियों में और प्रांतीय राजकुमारों द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रमों में लगातार कलाकार थे ।" [३] ये राजकुमार अक्सर अपने-अपने दरबार में उस्ताद का प्रदर्शन कराने के लिए एक-दूसरे से झगड़ते थे। बड़ौदा के शासकों ने उन्हें उच्च सम्मान में रखा और शाही दरबार के आधिकारिक कार्यों के दौरान उन्हें बड़ौदा के महाराजा के दाईं ओर की सीट की पेशकश की गई। उन्होंने जोरासांको ठाकुरबारी में भी प्रदर्शन किया, जो रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941) का आवासीय निवास था, [redacted] यह ज्ञात है कि टैगोर

"वह लखनऊ , इलाहाबाद , कलकत्ता , ग्वालियर , बॉम्बे और मैसूर के संगीत सम्मेलनों और मंडलियों में और प्रांतीय राजकुमारों द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रमों में लगातार कलाकार थे ।" [३] ये राजकुमार अक्सर अपने-अपने दरबार में उस्ताद का प्रदर्शन कराने के लिए एक-दूसरे से झगड़ते थे। बड़ौदा के शासकों ने उन्हें उच्च सम्मान में रखा और शाही दरबार के आधिकारिक कार्यों के दौरान उन्हें बड़ौदा के महाराजा के दाईं ओर की सीट की पेशकश की गई। उन्होंने जोरासांको ठाकुरबारी में भी प्रदर्शन किया, जो रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941) का आवासीय निवास था, जो उस्ताद के प्रशंसक थे। यह ज्ञात है कि टैगोर के निधन से कुछ साल पहले उन्होंने जोरासांको में एक संगीत सत्र आयोजित किया था। अन्य प्रसिद्ध प्रशंसकों में तबला वादक जैसे अहमद जान थिरकवा , उस्ताद अमीर खान , अली अकबर खान , विलायत खान और पंडित रविशंकर शामिल हैं ।

1: पंडित फ़ैयाज़ खान का जनम कब हुआ ?

2: फ़ैयाज़ खान के पिता का नाम लिखे ?

3: 1908 में आपको कौन सा पुरस्कार मिला था ?

4: फ़ैयाज़ खान ने कहा कहा संगीत सम्मेलन किए ?

5: आपके पिता के बाद आपका पालनपोषण किसने किया ?